International Journal of Arts & Education Research

खेलों में भ्रष्टाचार

डॉ0 ममता[*1]

[1]**अध्यक्षा एवं प्रवक्ता, शारीरिक शिक्षा विभाग, ईस्माईल नेशनल, महिला पी0जी0 कॉलिज, मेरठ।**

भ्रष्टाचार एक ऐसी मनोवृति है जिसमें व्यक्ति अपने क्षमताओं का दुरूपयोग करते हुये सार्वजनिक दायित्व की पूर्ति के स्थान पर अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करता है। आज भारत में व्यक्ति पद एवं संस्थाएँ भ्रंष्टाचार के दुष्चक्र के घेरे में है। हमारे देश में धन और शक्ति स्टेट्स सिम्बल बन गयी है चाहे वह कितने ही नाजायज तरीके से प्राप्त की गयी है।

भ्रष्टाचार अच्छे सफल खेल आयोजनों में एक बड़ा अवरोध है खेल एक सामाजिकरण की ऐजेन्सी जिसमें मानव खेलों के माध्यम से जुड़ता है। हम अपने जीवन के सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक यहाँ तक की नैतिक विकास के लिए प्रशासन पर निर्भर करते है। ठीक उसी तरह प्रशासन में फैले भ्रष्टाचार का प्रभाव हर स्तर पर प्रभावित करता है। हम यह जानते ही नहीं मानते भी है कि खेलों के भ्रष्टाचार की जड़ में हमारे राजनेता खेल मंत्रालय, खेल प्रशासनिक अधिकारी, कोच यहाँ तक खिलाड़ी भी।

खेल क्षेत्रों में हुये भ्रष्टाचार को 34 वे राष्ट्रीय खेलों भारतीय हॉकी महासंघ के जनरल सेक्रेटी ज्योति कुमारन द्वारा नेशनल टीम में खिलाड़ियों के चयन सम्बन्धी प्रक्रिया में लिए गए रिश्वत् की कारगुजारियों में, इण्डियन् प्रीमियम् लीग मे घोटाले, पिछले कुछ सालोक में मैच फिक्सिग की मामलों में फंसे खिलाड़ियों की कारगुजारियों तथा हाल ही में हुए 19 वे राष्ट्रमण्डल खेलों में हुए करीब 10 हजार करोड़ रूपये के घोटालों आदि में देखा जा सकता है।

भ्रष्टाचार के सम्बन्ध ट्रांसपेरेन्सी इंटरनेशल 2010 की रिपोर्ट विभिन्न देशों की भ्रष्टाचार की स्थिति में नजर रखने वाली उक्त अन्तर्राष्ट्रीय टीम संस्था द्वारा अक्टूबर, 2010 में जारी की गयी नवीनतम् रिपोर्ट में भारत भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक 3.3 आंकलन किया गया। 2010 में 178 देशों की सूची में भारत 87 वे स्थान पर है।

34 वे राष्ट्रीय खेलों में हुए भ्रष्टाचार के संदर्भ में ऑडिट रिपोर्ट द्वारा ये बताया गया इसमें इतनी वित्तीय अनिमिताए हुई और इसके केन्द्र में मुख्य भूमिका अध्यक्ष झारखण्ड ओलम्पिक ऐशोसियेशन के श्री आर0के0 आनन्द की रही। श्री आनन्द ने ये वित्तीय अनियमिताए खेल उपकरणों की खरीद फरोख्त केटरर्स और अन्य को दिए गए निवेदाओं में की। इस सम्बन्ध में एक एफ0आई0आर0 मि0 आनन्द और झारखण्ड ओलम्पिक ऐशोसियेशन के खिलाफ दर्ज की गयी लगभग 10 करोड़ रूपये उन कम्पनियों को अग्रिम अदा कर दिए गए जो उक्त खेलों की तैयारी और उनके आयोजनों में किसी भी तरह जुडी हुई थी। उपकरणों की खरीद उपरोक्त काफी ऊँची कीमतों पर की गयी खेल उपकरण जैसे ैपेजसम (सीटी) एक सीटी लगभग 450.00 रूपये में खरीदी गयी जबकि बाजारी मूल्य के हिसाब से .01 सीटी की कीमत 40 से 60 रूपये के बीच होती है। सूत्रों के अनुसार मि0 आनन्द और दूसरों के खिलाफ राष्ट्रीय खेलों में हुई उक्त अनियमिताओं के सम्बन्ध में कार्यवाही देरी से की गयी जबकि राष्ट्रीय खेल हमारे देश की गरिमा सम्बन्धी पहलू रहा जिससे सरकार को अपना स्थान उक्त मामलों में हटाना नहीं चाहिए था।

2008 में तत्कालीन भारतीय हॉकी महासंघ जनरल सचिव ज्योति कुमारन को राष्ट्रीय हॉकी टीम मे खिलाड़ियों को चयनित करने में ली गयी, रिश्वत मामले में उनके पद से हटा दिया गया। ज्योति कुमारन पर आने वाले मलेशिया टूनामेन्ट में खिलाड़ियों के चयन करने के सम्बन्ध में आरोप लगा लेकिन उन्होंने उक्त आरोपों से इन्कार किया उनके इस रवैये पर तत्कालीन इन्टर नेशनल ओलम्पिक ऐसोसियेशन कमेटी के अध्यक्ष, सुरेश कल्याणी का बयान था कि यह काफी दुःखद है लेकिन भारतीय हॉकी की गरिमा को वापिस लाने के लिए उपरोक्त कदम उठाना जरूरी था।

आई0पी0एल0 एक तीन साल पुराना क्रिकेट टूनामेन्ट है जो टी-20 की तर्ज पर आधारित है लेकिन इसमें व्यवयसायिक प्रतिष्ठान तथा भारतीय सिने जगत एक अदभुद मेल जोल नजर आता है जो इसको व्यवसायिक रूप से काफी सफल बनाता है। उक्त टूनामेन्ट में धन कमाने की अपार सम्भावनाओं के साथ-साथ भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाली प्रवृति भी उन्मुख रही है। जिसका परिणाम इण्डियन क्रिकेट बोर्ड तथा बी0सी0सी0आई0 जो कि भारत क्रिकेट खेल सम्बन्धी मोनोपोली या एक छत्र का निर्माण करता था द्वारा ये कहना कि वह इस आई0पी0एल0 फ्रेनचायज करार को निरस्त कर देगा स्पष्ट करता है कि क्रिकेट के इस आयोजन में भ्रष्टाचार के निर्माण की असीम सम्भावनाएं छिपी हुई थी। जिसका परिणाम क्रिकेट बोर्ड और आई0पी0एल0 के करिशमाई बोस ललित मोदी को हटाने के रूप में सामने आया। लेलित मोदी द्वारा इन खेलों में काफी वित्तीय अनियमिताएं बरसी गयी। 13 अक्टूबर को बी0सी0सी0आई0 की रिपोर्ट में ये कहा गया कि मोदी द्वारा उक्त इन खेलों में 4-7 बिलियन रूपये का घोटाला किया गया है। स्पष्ट है कि व्यापारिक घरआने तथा प्रतिष्ठान खेलों में भी आने प्रभाव को बढ़ाने में लगे हुए है। जिसका परिणाम भ्रष्टाचार के रूप में सामने आया।

19 वे राष्ट्रमण्डल खेलों का आयोजन 3-14 अक्टूबर,2010 नई दिल्ली में हुआ खेलों की तैयारी में लगे सभी प्रश्न चिन्हों को नजर अंदाज करते हुये भारत ने उद्घाटन समारोह में भी यह सिद्ध कर दिया कि ये देश अब से बड़े आयोजनों को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में सक्षम हो सकता है।

भारत में पहली बार ही राष्ट्रमण्डल खेलों का आयोजन किया गया था। जिसके लिए व्यापक स्तर पर भारत ने तैयारिया की। 19 वे राष्ट्रमण्डल खेलों को कराने के पीछे हमारा उधेश्य वैश्विकप्रतिस्पर्धा सूचकांक सूची की स्पर्धा पाने की होड़ विश्व बंधुत्व भावना का प्रचार-प्रसार, विश्व आर्थिक मंच का सिर मौर, उच्च खेल शिक्षा प्रशिक्षण, खेल उपकरण वस्तु की दक्षता, स्टेडियम निर्माण बाजारी कुशलता खेल उपकरण वित्तीय बाजार विकास, प्रौद्योगीय तत्परता वृहद आर्थिक माहौल खेल सामाजिकरण को बढ़ाने तथा विश्व स्तर पर विकासशील देशों के ऊपर होने की चेष्टा का आगाज करते हुए भारत ने राष्ट्रमण्डल खेलों का आयोजन किया जिनमें से ज्यादातर में हम क्रीड़ा क्षेत्र में होने वाले भ्रष्टाचार की बदौलत असफल सिद्ध हुए।

उक्त खेलों में खिलाड़ी व अधिकारियों की सुव्यवस्था के लिए खिलाडियों को आवास की सुविधा देने, स्टेडियमों का निर्माण, मैदानों का निर्माण, तरणताल का निर्माण, स्टेडियमों की साज सज्जा रंगाई पुताई पेंट, खेल उपकरणों की खरीद फरोख्त, आयोजन स्थल पर रैफरी कोच को दिए जाने वाले भत्ते खेल के दौरान खिलाड़ियों के के लिए फिजियोपैरेपिस्ट डॉक्टर की सुविधा, विजेताओं का मेण्डल देने, मैदानों में होने वाली सामग्री, खिलाड़ियों को भोजन सम्बन्धी व्यवस्था, खिलाड़ियों का भ्रमण सम्बन्धी आवागमन की व्यवस्था में भारत सरकार का अंथाह धन खर्च हुआ। 12 दिन के इस सफल समापन खेलों के पश्चात्

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

ज्ञात हुआ कि उक्त सब व्यवस्थाओं में 10 हजार करोड़ रूपये से भी अधिक का घोटाला हुआ है। उक्त धन राशि सरकारी राजकोष से प्राप्त की गयी थी। जो सम्पूर्ण देश की जनता से विभिन्न टैक्स के रूपों में वसूली गयी थी इस टैक्स को एकत्रित करके ही भारत सरकार योजना बनाती है किसी भी स्तर पर खेलों का आयोजन भी किसी योजना के तहत होता है कि उक्त योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए धन राजकोष से ही प्राप्त होता है।

उपरोक्त सम्पूर्ण बातों के मधेनजर यह स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार जो पहले राजनैतिक आर्थिक प्रशासनिक स्तरों में ही अपनी उपस्थिति दर्ज कराता हुआ मिल जाता है अब वह क्रीड़ा क्षेत्र में अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज करा रहा है। क्योकि खेलों में राजनीति व्यापारिक संस्थाएं प्रशासन आदि अपना उल्लेखनीय योगदान करते है। दोनों का एक दूसरे पर काफी प्रंभाव है, जाहिर है कि उनमें से किसी में भी होने वाला भ्रष्टाचार अबोध रूप से दूसरे को भी प्रभावित करता रहेगा। इस स्थिति को हम निम्न प्रकार से देख सकते है। हमारे देश में ज्यादातर खेल संघों के अध्यक्ष या सचिव या तो राजनतिक व्यक्ति होते है या प्रभावशाली प्रशासनिक अधिकारी होते है जिनका न तो कोई खेल सम्बन्धी वैकग्राउण्ड होता है न ही वे खेलों के प्रति कोई गम्भीरता का प्रर्दशन कर पाते है। सुरेश कल्माणी करीब 14 साल तक आई0ओ0ए0 के अध्यक्ष रहे लेकिन उनका कोई खेल सम्बन्धी वैकग्राउण्ड नहीं था। यही कारण है कि खेलों की प्रतिस्पर्धा में हमारे देश की स्थिति बड़ी सोचनीय है एक परिस्थिति में हम कैसे अच्छे प्रर्दशनों की उम्मीद कर सकते है। खेल चयन समिति के सदस्यों में ही नहीं बल्कि खिलाड़ियों में भी खेलों के प्रति नैतिक मूल्यों का ह्रास निरन्तर हो रहा है। राष्ट्रीय महिला हॉकी टीम के कोच द्वारा महिला खिलाड़ियों के यौन शोषण सम्बन्धी खबरे खिलाड़ियों का डापिंग टैस्ट में फेल होना ये सब क्रीड़ा क्षेत्र में घटते नैतिक मूल्यों का उदाहरण है। स्पष्ट है कि राजनीतिक आर्थिक, प्रशासनिक, अध्यात्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य ये सब क्रीड़ा क्षेत्र को प्रभावित कर रहे है और इसमें फैला भ्रष्टाचार, कदाचार खेलों को भी इसी तरह से प्रभावित कर रहा है।

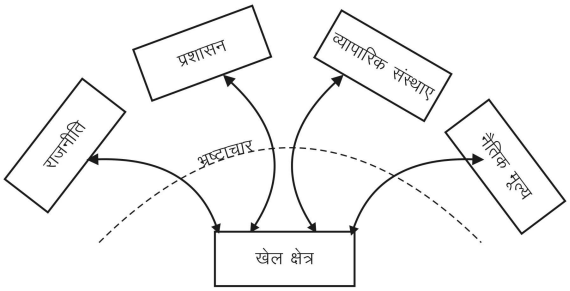

वास्तव में राष्ट्रमण्डल खेलों का आयोजन एक प्रकार के सामाजिक आर्थिक विकास की कार्यशैली का पथ प्रर्दशक था परन्तु राष्ट्रमण्डल खेलों के आयोजन के साथ भ्रष्टाचार रूपी सुरक्षा की भेंट चढ़ गया राष्ट्रमण्डल खेल यदि भ्रष्टाचार से दूर रहता तो एक अच्छा अन्तर्राष्ट्रीय खेल आयोजन प्रभावशाली रूप से भविष्य में आयाजित हो सकता है। यह स्पष्ट हो चुका है कि किसी भी देश के सफल खेल आयोजनों में उस देश की सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक, प्रशासनिक ढांचा उसको सफल बनाने मं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जो खेल हमारी अस्मिता का गौरवशाली प्रभाव बन सकते थे। भ्रष्टाचार ने उसे हमारे लिए अर्न्राष्ट्रीय स्तर पर शर्म का विषय बना दिया इन खेलों के आयोजनों ने हमारे देश की विधि तथा उसके कार्यान्वयन की पोल समस्त विश्व के समक्ष खोल कर रख दी है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

सुझावः- क्रीड़ा भ्रष्टाचार रूपी व्याधि का वास्तविक निदान यह है कि उसे जन्म देने वाले कारणों को ही समाप्त किया जाये। राजनेतिक व्यवहारिक प्रवृति के सुधारों की आवश्यकता है। क्रीड़ा क्षेत्र को भ्रष्टचार मुक्त बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम क्षेत्र में राजनिति प्रशासन तथा आर्थिक क्षेत्रों का प्रभाव कम से कम हो उनका दखल उस सीमा तक ही स्वीकृत किया जाना चाहिए जिस हद तक यह क्षेत्रों को प्रभावी रूप से सफल बनाने के लिए आवश्यक हो। यह खेल पतिस्वर्धा से क्षेत्रों की स्वार्थ पूर्ति का माध्यम न बन पायें बल्कि खेल क्षेत्रों में आने वाले व्यक्ति/खिलाडी आदि खेल मूल्यों की अथवा भावनाओं की समझ रखने वाले हो तथा खेलों को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर देश की पहचान बनाने में स्वार्थ रहित होकर योगदान करने वाले होने चाहिए किसी व्यक्ति का क्रीड़ा क्षेत्र की तरफ रूझान तथा किसी विशिष्ट खेल में उसकी कार्यक्षमता व शैली परिणाम के साथ-साथ उसे ईश्वर की ओर से दिया गया एक विशिष्ट गुण भी है। लेकिन भ्रष्टाचार के दानव से यह गुण भी अछूता नहीं रहा यहां अंग्रेजी के महान लेखक शेक्शपियर तथा रचित हेमलेट की निमन पक्तियाँ सही प्रतीत होती है-

''ईश्वरदत्त सदगुण भी अब भ्रष्टाचार और आम व्यक्तियों से बचा नहीं है। परजीवी कृमि पुष्प कलिकाओं को खिलने से पूर्व ही समाप्त कर देता है।''

भारत में खेल क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर यह पंक्तियाँ एकदम खरी उतरती है।

सबसे पहले क्रीड़ाक्षेत्र में खिलाडियों की चयन सम्बन्धि प्रक्रिया एकदम स्वच्छ व पादर्शी होनी चाहिए। अच्छे खिलाड़ियों के चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता होने से कुशल व्यक्तियों का चयन सम्भव हो पायेगा। नियम तथा कानून सरल बनाये जाने चाहिए। नियम सिर्फ खेल विशेष में कुशलता को माना जाना चाहिए न कि व्यक्ति विशेष से, उसके सम्बन्धों को या धन को। खेल चयन समिति में बैठे लोग कभी न कभी खेलों से जुडे अवश्य रहे हो या उस खेल विशेष के खिलाड़ी अवश्य रहे हों। तभी वह इन चयन समितियों के सदस्य बनने के योग्य होगे यह नियम प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिए। इस तरह का व्यक्ति उस खेल के लिए आवश्यक सभी गुणों के विषय की अच्छी जानकारी रखने में सक्षम होता है। तथा आने वाली कठिनाईयों में निपटने में भी कुशल सिद्ध होता है। चयन सम्बन्धी प्रक्रियाओं में राजनितिक व प्रशासनिक हस्तक्षेप बिल्कुल नही होना चाहिए। इस प्रक्रिया में यह हस्तक्षेप खेलों में भ्रष्टाचार की प्रथम स्तर पर वारणास्थली बनता है।

यह सही है कि आज के युग में खेल प्रतिस्पर्धा पैसा कमाने का एक प्रभावीशाली माध्यम बन चुकी है। इसलिए व्यापारिक प्रतिष्ठान भी हम प्रतिस्पर्धाओं में अवसर प्राप्त करने के लिए ऐड़ी चोटी का जोर लगाते है। हम खेल से ग्लैमर का जुटाव भी लोगों व खिलाड़ियों को आकर्षित कर रहा है। इस तरह जो खेल प्रतिस्वर्धाओं कभी ऊँची नैतिक मूल्यों तथा खेल भावनाओं से ओत-प्रोत रहती थी। आज विभिन्न खेलों के हेस्तक्षेप के कारण निरन्तर खेल मूल्यों के ह्रास की तरफ अग्रसर है। इसके साथ-साथ यह भी उतना ही सही है कि राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर खेल प्रतिस्पर्धाओं का मुख्य आयोजन होने के लिए पैसे की नितांत आवश्यक है जो विभिन्न खेलों के योगदान से ही सम्भव है। इसका सबसे अच्छा उपाय यह होगा कि आयोजनों के लिए इन खेलों का योगदान लिया जाये परन्तु यह खेल प्रतिस्पर्धाओं की चयन प्रक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं रखना चाहिए। खेलों में योग्य तथा कुशल व्यक्तियों को ही अवसर मिल पाये इसे लिए इस चयन प्रक्रिया सम्बन्धी स्तर पर सिर्फ योगदान और कुशलता को ही मापदण्ड बनना नितांत आवश्यक है। खेल प्रतिस्पर्धाओं में इन क्षेत्रों से योगदान लेना बुरा नहीं है। बुरा है इन

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

मेनों`स मिलने वाले योगदान के बदले में चयन प्रक्रिया में इन मेनों की मनमानी को स्वीकार कर लेना और इसी स्तर पर जोकि किसी भी खेल प्रतिस्पर्धा का बहुत ही महत्वपूर्ण चरण होता है। तथा खेलों के प्रर्दशन पर अपना अवश्यंभारी प्रभाव डालता है, भ्रष्टाचार का समावेश होना बहुत ही दुख का विषय है। इसका प्रभाव हम अपने देश में होने वाले खेल प्रतिस्पर्धाओं में प्रदर्शन तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिखने वाले प्रदर्शन के सन्दर्भ में देख सकते है। जब इन निर्णयन प्रक्रियाओं में पारदर्शिता आयेगी तो खेल क्षेत्रों की भ्रष्टाचार की समस्या काफी हद तक दूर हो पाना सम्भव हो पायेगा।

खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने वाले खिलाडियों को सभी आवश्यक सुविधाएं दी जानी चाहिए जिससे वह अपने खेल कौशल्य में सुधार निरंतर कर सके। उन्हें किसी प्रकार की वित्तीय असुरक्षा का सामना नहीं करना पड़े अन्यथा यह उनके खेल कौयशल्यों ॓;पसससेद्ध को प्रभावित करेगा। हमारे देश में हजारों ऐसी खेल प्रतिभाएँ है जो वित्तीय कमी तथा चयन प्रक्रिया के भ्रष्टाचार के चलते सामने नहीं आ पा रही है। हमारे देश में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है जरूरत है इस प्रतिभा को सामने लाने की है।

सभी कारणों से ही किसी भी स्तर की खेल आयोजनों में देश का प्रदर्शन काफी निराशानजक रहता हे। यदि हम इन कमियों को दूर करन में सफल हो सके तो खेल क्षेत्रों में भ्रष्टाचार रूपी दानव से मुक्ति प्राप्त कर पायेगे।

हमारे देश में कमी भी तथा किसी भी स्तर पर खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं रही है न ही आज है कुछ आवश्यक तथा प्रभावशाली कदम उठाने से भ्रष्टाचार से भी मुक्ति पायी जा सकती है। कमी है तो बस एक बात की कि व्यवस्था से जुड़े लोगों में हम आत्मिक बल की कमी है जो उन्हें इस भ्रष्टाचार रूपी मनोवृति से छुटकारा दिला सके। सब कुछ होने के बाद भी हम न तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर खेलों में कुछ विशेष कर पाये और अब खेल आयोजन के स्तर पर भी विश्व के समक्ष हमारी व्यवस्थाओं और खोखले मानदण्डों की पोल खुल चुकी है। जिस आयोजन को हम राष्ट्रीय गौरव का विषय बनाना चाहते थे वह हमारे लिए विश्व के समक्ष राष्ट्रीय शर्म और श्रोभ का विषय बन गया और कारण सिर्फ यही कि हमारे नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक मूल्यों में निरन्तर होता ह्रास भ्रष्टाचार को फलने फूलने का अवसर देता गया और इसका आगाज तो हमें पहले ही हो चुका था परिणाम भी हमें विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में प्रदर्शन के स्तर पर मिल रहा था लेकिन हाल में हुऐ ये घोटाले जिन्होंने खेल क्षेत्र को भी भ्रष्टाचार की आराम गाह में तब्दील कर दिया, बल्कि हमें विश्व के समस्त नैतिक तथा आध्यात्मिक तौर पर भी दिवालिया घोषित कर दिया जिस देश को कमी विश्व ने नैतिक तथा आध्यात्मिक स्तर पर अपना अग्रणी माना था। सोचना होगा कि इस धरातल तक आखिर हम क्योंकर पहुँच गये कोई है जो हमें यहां से निकाल?

सन्दर्भ

1. प्रतियोगिता दर्पण अगस्त माह, (2011) पृष्ठ– 96–97, 188, 189।
2. प्रतियोगिता दर्पण दिसम्बर माह, (2011) पृष्ठ– 898–99, 22, 23
3. हिन्दूस्तान–24 अक्टूबर (2011), पृष्ठ– 14
4. जैमक म्बवदवउपेज छमू चंचमतए 2012ण
5. प्दकपंद भ्वामल थ्मक मतंजपवद`ने चमदकमक `जिमत इतपइमतल वदंस`बंदकंसए 2 उंलए 2008ण
6. छंजपवदंस ळंउमे पद तिर्मी बवदजतवअमतेल श्रंद 15ए 2010

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

7. व्द उंल13ए ाउइेंतकवत त्वइमतज व्ए ठसांमए ेंपेजमदज ेमबतमजंदल वि जंसजम वित ेवनजी ंदक बमदजतंस ेपंद ंििपितेए ूपसस ेचमां ंज ब्ै वद जीम ेनइरमबज वि न्ै —द प्दकपंद तमसंजपवदे रू ब्नततमदज प्ेनमे ंदक निजनतम व्चचवतजनदपजपमेण
8. जीम 2010 बवउउवद ूपजी ळंउमे रू प्दकपंश्े ज्तपनउची वत क्पेंजमतघ इल ैमरमकंेउं त्मीउंद श्रनसल 08ए 2010 छरू 166 ;ैॅद्व

9. ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल वैश्विक रिपोर्ट, 3 दिसम्बर, 2011।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.